IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जनपद पीलीभीत में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा–7 के विद्यार्थियों में गृहविज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन।

स्मिता लोधी
प्रवक्ता (गृहविज्ञान)
जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान
बीसलपुर, पीलीभीत

महेन्द्र कुमार सिंह
उप षिक्षा निदेषक एवं प्राचार्य
जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान
बीसलपुर, पीलीभीत

सारांश

शिक्षा हमारे जीवन का मूल आधार है। यह एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है। प्रस्तुत शोध हेतु कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन किया गया है। प्रस्तुत शोध में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की बालिकाओं के गृहविज्ञान विशय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। षोध हेतु स्वनिर्मित प्रष्नावली का प्रयोग किया गया है। षोध हेतु प्रयुक्त न्यादर्ष के अर्न्तगत षोधार्थी द्वारा जनपद पीलीभीत के 8 विकास क्षेत्रों मे से 4 विकास क्षेत्रों से कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों का चयन यादृच्छिक गुच्छ न्यादर्ष विधि से किया गया। 6 उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं 4 कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालयों में स्तरीकृत सम्भाव्य न्यादर्ष विधि द्वारा 80–80 विद्यार्थियों का रैंडम विधि द्वारा चयन किया गया। षोध अध्ययन हेतु षोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया। षोध कार्य से प्राप्त प्रदत्तों का साख्यिकी विष्लेशण मध्यमान, मानक विचलन तथा ज. मान की गणना के आधार पर किया गया है। गणना के आधार पर प्राप्त किये गये परिणाम से यह ज्ञात हुआ कि कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

कूट शब्दावलीः–
कस्तूरबा आवासीय बालिका विद्यालय, परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, षैक्षिक उपलब्धि।

प्रस्तावनाः–

शिक्षा सभी के विकास के लिए सबसे आवश्यक एवं महत्वपूर्ण साधन है। सभी को शिक्षा प्राप्ति का अधिकार है। शिक्षा ही मानव को योग्य बनाती है। एक उन्नत राष्ट्र एवं समाज के विकास के लिये बालक एवं बालिका दोनों को ही शिक्षा की आवश्यकता है। बालिका शिक्षा हमारे समाज एवं परिवार की धुरी है।

जीवन और शिक्षा दानों का अभिन्न सम्बंध है। जीवन को सार्थकता शिक्षा पर आधारित है। शिक्षा का मूल उद्देश्य जीवन का विकास करना है। शिक्षा व्यक्ति में स्मृति, तर्क, शक्ति एवं ध्यान

आदि को पुष्ट करती है। शिक्षा मानव मस्तिष्क का विकास कर व्यक्ति की सोच में सकारात्मक परिवर्तन लाती है।

भारत में केन्द्र सरकार ने सर्व शिक्षा अभियान को बढ़ावा देने के लिए कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय योजना के निर्देशन में देश भर में 750 आवासीय स्कूल खोलने का प्रावधान किया। कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालय योजना की शुरूआत वर्ष 2003–04 में की गई थी। इन विद्यालयों में कम से कम 75: अनुसूचित जाति व जनजाति, पिछडा वर्ग व अल्पसंख्यक वर्गों की बालिकाओं के लिए आरक्षित हैं बाकी 25: गरीबी रेखा के नीचे जीवन–यापन करने वाले परिवार की बालिकाओं के लिए हैं। कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय का मुख्य उद्देश्य विषम परिस्थितियों में जीवन यापन करने वाली अभिवंचित वर्ग एवं विद्यालय छोड़ी हुई बालिकाओं के लिए आवासीय विद्यालय के माध्यम से गुणवत्तायुक्त शिक्षा उपलब्ध कराना है। ग्रामीण क्षेत्रों और वंचित समुदायों के बीच लैंगिक असमानता अभी भी बनी हुई है। प्राथमिक स्तर पर लड़कियों के नामांकन में लड़कों की तुलना में विशेष रूप से उच्च प्राथमिक स्तर पर महत्वपूर्ण अंतर बना हुआ है। कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालयों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रारम्भिक स्तर पर आवासीय सुविधाओं के साथ आवासीय विद्यालयों की स्थापना करके समाज के वंचित समूहों की लड़कियों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा संभव और सुलभ हो सके।

यह योजना 2003–2004 में शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लाकों (ई.बी.वी.), जहां ग्रामीण महिला साक्षरता राष्ट्रीय औसत (46ण्13: जनगणना 2001) से कम है और साक्षरता में लिंग अंतर्राष्ट्रीय औसत (21ण्59: जनगणना 2001) से अधिक है, इन ब्लॉकों में निम्नलिखित क्षेत्रों में स्कूल स्थापित किए गये थेः–

1. जनजातीय आबादी की सघनता, कम महिला साक्षरता, और जहॉ बालिकायें स्कूल से ड्रापआउटहैं।
2. अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछड़ावर्ग और अल्पसंख्यक आबादी की सघनता, कम महिला साक्षरता और जहॉ बालिकायें स्कूल से ड्रापआउट हैं।
3. कम महिला साक्षरता वाले क्षेत्र।
4. कई छोटी, बिखरी हुई बस्तियों वाले क्षेत्र जो स्कूल के योग्य नहीं हैं।

निम्नलिखित को शामिल करने के लिए पात्र ब्लॉकों के मानदंड को 1 अप्रैल 2008 से संशोधित किया गया है।

1. 30: से कम ग्रामीण महिला साक्षरता वाले अतिरिक्त 316 शैक्षिक रूप से पिछड़े ब्लांक।
2. राष्ट्रीय औसत (53ण्67: जनगणना 2001) से कम महिला साक्षरता दर वाले 94 कस्बों/शहरों में अल्पसंख्यक बहुलता (अल्पसंख्यक मामलों के मंत्रालय द्वारा पहचान की गयी सूची के अनुसार) हैं।

भारत मे गृह विज्ञान का अध्ययन सन् 1920 से ब्रिटिश काल में शुरू हुआ। सन् 1926 में भारतीय स्त्री संगठन की कुछ सदस्यों ने राजनीतिक स्वतंत्रता के स्थान पर स्त्रियों की शिक्षा को अपना प्राथमिक उद्देश्य माना आर भारतीय स्त्री संगठन छोड़कर अखिल भारतीय स्त्री सम्मेलन स्थापित किया। इस नये समूह में स्त्रियों को गृह विज्ञान में प्रशिक्षित करने के लिए सन् 1932 में दिल्ली में लेडी इरविन कॉलेज की स्थापना की गई। गृह विज्ञान, शिक्षा की वह विधा है जिसके अंतर्गत आहार एवं पोषण, गृह अर्थशास्त्र, उपभोक्ता अर्थशास्त्र, बाल विकास, गृह व्यवस्था एवं वस्त्र तथा परिधान विज्ञान आदि का अध्ययन किया जाता है। गृह विज्ञान का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना है। यह एक ऐसा विषय है जिसका क्षेत्र बहुत व्यापक है। विज्ञान तथा तकनीकी की आधुनिक जानकारी तथा गृह विज्ञान विषय की शिक्षा से पारिवारिक जीवन में सुधार करके सुखमय जीवन व्यतीत किया जा सकता है।

परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय गैर आवासीय प्रकार के होते है। बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु इन विद्यालयों में भी अधिक से अधिक बालिकाओं का नामांकन किया जाता है, जिससे कोई भी बालिका शिक्षा से वंचित न रहें।

कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में छात्राओं द्वारा गृहविज्ञान विषय का अध्ययन किया जाता है। गृह विज्ञान विषय हमें स्वस्थ एवं व्यवस्थित जीवन व्यतीत करना सिखाता है।

गृह विज्ञान मुख्य रूप से बालिकाओं का विषय माना जाता है, इसलिए इस विषय का अध्ययन विशेष रूप से बालिकाओं द्वारा ही किया जाता है। गृह विज्ञान अन्य विषयों के साथ भी अन्तः सम्बन्ध स्थापित करता है। गृहविज्ञान विषय एक ऐसा विषय है जो नारी के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसलिए इसे उच्च प्राथमिक स्तर पर एक विषय के रूप में शामिल किया गया। इस विषय के अन्तर्गत बालिकायें बाल विकास, गृह व्यवस्था, वस्त्र एवं परिधान विज्ञान, आहार एवं पोषण विज्ञान, स्वास्थ्य रक्षा एवं प्राथमिक चिकित्सा आदि के बारे में अध्ययन करती है।

गृहविज्ञान का अध्ययन बालिकाओं का सर्वांगीण विकास कर परिवार समाज और देश के प्रति अपनी जिम्मेदारियों के निर्वहन योग्य बनाता है। साथ ही करियर तथा रोजगार के अवसर प्रदान कर आर्थिक रूप से भी उन्हे सशक्त बनाता है।

कूट षब्दावली का परिभाशीकरण

1.कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय– केन्द्र सरकार द्वारा अगस्त 2004 में उच्च प्राथमिक स्तर पर आवासीय विद्यालयों की स्थापना के लिए इन विद्यालयों की षुरूआत की गई। जिसमें कक्षा–6 से कक्षा 8 तक की षिक्षा के लिए अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति, अन्य पिछडा वर्ग और अल्पसंख्यक बालिकाओं का निषुल्क प्रवेष होता है।

2.परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय– षासन द्वारा संचालित विद्यालय जो कक्षा–6 से 8 तक के विद्यार्थियों को निषुल्क षिक्षा प्रदान करते है।

3.षैक्षिक उपलब्धि– इससे तात्पर्य विद्यार्थियों की विभिन्न विशयों में प्राप्त परिणामों के आधार पर षैक्षिक योग्यता से है।

शोध के उद्देश्यः–

जनपद पीलीभीत के परिषदीय उच्च प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर बालिकाओं हेतु संचालित कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों की छात्राओं की गृहविज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

शोध परिकल्पनाः–

जनपद स्तर पर कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में गृह विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध का सीमांकनः–

1. यह अध्ययन उत्तर प्रदेश के जनपद पीलीभीत के कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं के गृहविज्ञान विषय में शैक्षिक उपलब्धि स्तर तक ही सीमित है।
2. यह षोध जनपद पीलीभीत के 8 विकास क्षेत्रों में से 4 विकास क्षेत्रों के विद्यालयों के छात्राओं के चयन तक सीमित है।
3. यह शोध केवल कक्षा–7 में पढ़ने वाली छात्राओं तक ही सीमित है।

शोध प्रारूप :–

अ) प्रस्तुत शोध कार्य हेतु उत्तर प्रदेश के जनपद– पीलीभीत के कस्तूरबा गॉधी आवासीय बालिका विद्यालयों एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों की छात्राओं का चयन किया गया।

ब) शोध विधिः–

शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

स) न्यादर्श विधिः–

प्रस्तुत शोध कार्य हेतु जनपद पीलीभीत के 8 विकास क्षेत्रों में से 4 विकास क्षेत्रों का चयन यादृच्छिक गुच्छ सम्भाव्य प्रतिचयन विधि से किया गया तत्पष्चात इन्ही विकास क्षेत्रों के कुल 06 परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय तथ 04 कस्तूरबा आवासीय विद्यालयों का चयन स्तरीकृत सम्भावित विधि द्वारा किया गया। इन्ही विद्यालयों में से 80–80 विद्यार्थियों का चयन कमबद्ध प्रतिचयन विधि द्वारा किया गया।

क0स0	विद्यालय	विद्यार्थियों की संख्या
1	कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय	80
2	परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय	80

शोध उपकरण–

षोधर्थी द्वारा स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी विश्लेषण–

प्रस्तुत शोध में सांख्यिको विश्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–टेस्ट की गणना से की गई।

परिकल्पनाः–

जनपद स्तर पर कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालयों एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत छात्राओं में गृह विज्ञान विषय की शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अन्तर नहीं है।

प्रदत्त विश्लेषण एवं व्याख्या

सारणी क्रमांक– 01

क्र.	विद्यालय	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	ज–मान	परिणाम
1.	कस्तूरबा में अध्ययन कक्षा–7 के विद्यार्थी	80	22.21	25.38	30.26	सार्थक अन्तर पाया गया।
2	परिषदीय उ0प्रा0 वि0 में अध्ययनरत कक्षा–7 के विद्यार्थी	80	12.61			

उपराक्त तालिका में दर्शाये गये विवरणानुसार कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालय एवं गैर आवासीय परिशदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय दोनों समूहों का मध्यमान कमशः 22.21 एवं 12.61 पाया गया। दोनों समूहों का सांख्यिकी गणनानुसार मानक विचलन 25.38 पाया गया एवं ज.मान 30.26 पाया गया। जो कि कर्ण 158 सार्थकता स्तर 0.05 तथा 0.025 पर प्राप्त कमशः ज.मान 1. 98 तथा 2.61 से अधिक है।

अतः प्राप्त आकड़ों के आधार पर तालिका का अध्ययन करने पर ज्ञात हुआ कि परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं एवं कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों क छात्राओं के

शैक्षिक उपलब्धि स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। अतः प्रयुक्त परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

निश्कर्शः—

प्रस्तुत शोध अध्ययन में कस्तूरबा गांधी आवासीय बालिका विद्यालय एवं परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर की छात्राओं की उपलब्धि स्तर में महत्वपूर्ण अंतर पाया गया।

प्राप्त आंकड़ों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि परिषदीय उच्च प्राथमिक एवं कस्तूरबा विद्यालय के छात्राओं के शैक्षिक उपलब्धि स्तर में जो सार्थक अंतर पाया गया है, उसका मुख्य कारण यह है कि यहॉ की छात्राएं छात्रावास में रहती है जिससे कस्तूरबा विद्यालय में बालिकाओं का ठहराव होता है और इसका प्रभाव उनके शैक्षिक एवं अधिगम प्रकिया को प्रभावित करता है। इन विद्यालयों का प्रकार आवासीय होता है। छात्राओं द्वारा एक नियमित दिनचर्या का पालन किया जाता है और इस दिनचर्या में उनके शैक्षिक, खेल, मनोरंजन तथा रात्रि की पढ़ाई के घंटे निर्धारित होते हैं जिनका नियमित रूप से पालन किया जाता है। अतः कस्तूरबा विद्यालयों में पढ़ने वाली बालिकाओं को एक अच्छा एवं स्वस्थ शैक्षिक वातावरण प्राप्त होता है। छात्रावास में नियमानुसार सभी समुचित व्यवस्थाएं होती है जिससे कि उनके शैक्षिक स्तर पर प्रभाव पड़ता है। इसके विपरीत परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालय की छात्राओं को विद्यालय में तो शैक्षिक वातावरण मिलता है लेकिन घर पर उचित शैक्षिक वातावरण का प्रायः अभाव पाया जाता है। परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों में पढ़ने वाली बालिकाएं नियमित रूप से विद्यालय नहीं आ पातीं इसका मुख्य कारण उनके माता—पिता द्वारा मजदूरी या खेतों पर काम करने जाने के कारण बालिकाओं पर अपने छोटे भाई बहिनों की देखरेख एवं अन्य घरेलू कार्यों की जिम्मेदारी दे दी जाती है तथा साथ ही साथ माता—पिता का बालिकाओं की शिक्षा के प्रति संवेदनशील न होना। यदि उनका नामांकन विद्यालय में करा भी दिया जाता है तब भी अभिभावक उनकी शिक्षा के प्रति जागरूक नहीं रहते जिसका प्रभाव उनके शैक्षिक उपलब्धि स्तर को प्रभावित करता है।

आभारः—

प्रस्तुत षोध अध्ययन को राज्य षैक्षिक अनुसंधान एवं प्रषिक्षण परिशद, लखनऊ, उत्तर प्रदेष की वित्तीय सहायता तथा जिला षिक्षा एवं प्रषिक्षण संस्थान, बीसलपुर, पीलभीत के वरिश्ठ प्रवक्ता श्री दरवेष कुमार के मार्गदर्षन में सम्पन्न किया गया है।

सुझावः—

1. शिक्षक द्वारा छात्राओं को नियमित रूप से गृहकार्य दिया जाये और उसे जांचा जाये।
2. परिषदीय उ0प्रा0 विद्यालयों में पढ़ने वाली छात्राओं के शैक्षिक स्तर में सुधार हेतु शिक्षकों द्वारा अभिभावकों को जागरूक किया जाये।
3. अभिभावकों द्वारा नियमित रूप से बालिकाओं को विद्यालय भेजा जाये। जिससे उनकी पढ़ाई नियमित रूप से हो सके।
4. बालिकाओं को उनके अभिभावकों द्वारा गृहकार्य में न लगाया जाये उन्हें घर पर पढ़ने का अवसर एवं षैक्षिक वातावरण प्रदान किया जायें।
5. समुदाय एवं समाज को बालिकाओं की शिक्षा का महत्व बताया जाये।

संदर्भ सूची —

1. बाबूलाल (2011), बालक अभिभावकों संबंधों का बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन।
2. दुबे भावेश चंद (2011), विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर शैक्षिक अभिप्रेरणा तथा समायोजन का प्रभाव।

3. कुमार, अजय (2017), माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि एवं रसायन विज्ञान में अवधारण पर सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रभाव का अध्ययन, लघु शोध प्रबंध, महात्मा ज्योतिबाफूले रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय, बरेली।
4. गुप्ता, ए.पी. (2017), उच्चतम सांख्यिकी विधियां, आगरा – मेरठ पुस्तक भण्डार।
5- Sampreety Gogoi and Sajib Borua (2015). Evaluation of District wise Differences in Proper Implementation of Different Activities in the Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya (KGBV) Case Studies Volume 4, Issue 5 – May-2015
6- Sampreety Gogoi and Utpala Goswami (2015) Efficacy of Kasturba Gandhi Balika Vidyalaya (KGBV) in Assam on academic performance of children. Asian Journal of Home Science Volume 10 | Issue 1 | June, 2015 | 161-167

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation